{ मणुसगइणामाए जहण्णओ पदेससंकमो कस्य? जो तेउक्काइओ वाउक्काइओ वा उव्वेल्लिदमणुसगइणामकम्मो जहण्णेण कम्मेण तेउ-वाउवज्जेसु सुहुमेसु खुद्दाभवग्गहणमच्छिऊण संजुत्तो, पुणो तेउजीवे वा वाउजीवे वा गदो तस्स सव्वमहंतेण उव्वेलणकालेण मणुसगइं उव्वेल्लमाणस्स जं दुचरिमुव्वेल्लणखंडयं तस्स चरिमसमए जहण्णओ पदेससंकमो** (x x x एयस्स एव उच्चस्स। मणुयदुगस्स य तेउसु वाउसु वा सुहुमबद्धाणं।। क. प्र. २, १०५. x x x इयमत्र भावना -- मनुजद्विकमुच्चैर्गोत्रं च प्रथमतस्तेजोवायुभवे वर्तमानेन नोद्वलितं पुनरपि सूक्ष्मैकेन्द्रियभवमुपागतेनान्तर्मुहुर्ते यावद् बद्धं, ततः पंचेन्द्रियभवं गत्वा सप्तमनरकपृथिव्यामुत्कृष्टस्थितिको नारको जातः। तत उद्धृत्य पंचेन्द्रियतिर्यक्षु मध्ये समुत्पन्नः। एतावन्तं च कालमबद्ध्वा प्रदेशसंक्रमेण चानुभूय तेजोवायुषु मध्ये समागतः। तस्य मनुजद्विकोच्चैर्गोत्रे चिरोद्वलनोद्वलयतो द्विचरमखण्डस्य चरमसमये परप्रकृतौ यद्दलं संक्रामति स तयोर्जघन्यः प्रदेशसंक्रमः। मलय.) । >

< मनुष्यगति नामकर्मका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है? मनुष्यगति नामकर्मकी उद्वेलना करनेवाला जो तेजकायिक अथवा वायुकायिक जीव जघन्य कर्मके साथ तेजकायिक और वायुकायिक को छोड़कर शेष सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंमें क्षुद्रभवग्रहण काल रहकर उसको बाँधता है, फिर तेजकायिक अथवा वायुकायिक जीवोंमें जाकर सबसे महान उद्वेलनकालके द्वारा मनुष्यगतिकी उद्वेलना कर रहा है, उसका जो द्विचरम उद्वेलनकाण्डक है उसके अन्तिम समयमें उसका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है। >

{ तिरिक्खगइ-उज्जोवणामाणं जहण्णओ पदेससंकमो कस्स? जो जहण्णएण संतकम्मेण मणुसगइं गदो, तिपलिदोवमिएसु उववण्णो, अंतोमुहुत्ते सेसे सम्मत्तं लद्धूण पलिदोवमिओ देवो जादो, तदो अपरिवडिदेण सम्मत्तेण मणुसगदिं गदो, पुणो वि अपरिवडिदेण एकत्तीससागरोवमिओ देवो जादो, अंतोमुहुत्तुववण्णो मिच्छत्तं गदो, तदो तस्स

देवभवस्स अंतोमुहुत्तसेसे सम्मत्तं लद्धं तदो बे-छावट्ठिसेसा सम्मत्तमणुपालिय, चदुक्खुत्तो कसाए उवसामिय, तिस्से उक्कस्सियाए सम्मत्तद्धाए अंतोमुहुत्ते सेसे खवणाए अब्भुट्ठिदो, तदो अधापवत्तकरणस्स चरिमसमए तिरिक्खगइ-उज्जोवणामाणं जहण्णओ पदेससंकमा** (तेवट्ठिसयं उदहीणं स चउपल्लाहियं अबंधित्ता। अंते अहप्पवत्तकरणस्स उज्जोव-तिरियदुगे।। क. प्र. २, १०७. x x x कथं त्रिषष्ट्यधिकं सागरोपमाणं शतं चतुःपल्याधिकं च यावद् बध्वेति चेदुच्यते -- स क्षपितकर्मांशस्त्रिपल्योपमायुष्केषु मनुजेषु मध्ये समुत्पन्नस्तत्र देवद्विकमेव बध्नाति, न तिर्यद्विकं नाप्युद्योतम्। तत्र चान्तर्मुहूर्ते शेषे सत्यायुषि सम्यक्त्वमवाप्य ततोऽप्रतिपतितसम्यक्त्वं एव पल्योपमस्थितिको देवो जातः। ततोऽप्यप्रतिपतितसम्यक्त्वो देवभवाच्च्युत्वा मनुष्येषु मध्ये समुत्पन्नः। ततस्तेनैवाप्रतिपतितेन सम्यक्त्वेन सहित एकत्रिंशत्सागरोपमस्थितिको ग्रैवेयकेषु मध्ये देवो जातः। तत्र चोत्पत्त्यनन्तरमन्तर्मुहुर्तादूर्ध्वं मिथ्यात्वं गतः। ततोऽन्तर्मुहूर्तावशेषे आयुषि पुनरपि सम्यक्त्वं लभते। ततो द्वे षट्षष्टी सागरोपमाणां यावन्मनुष्यानुत्तरसुरादिषु सम्यक्त्वमनुपाल्य तस्याः सम्क्त्वाद्धाया अन्तर्मुहूर्ते शेषे शीघ्रमेव क्षपणाय समुद्यतः। ततोऽनेन विधिना त्रिषष्ट्यधिकं सागरोपमाणां शतं चतुष्पल्याधिकं च यावत्तिर्यग्द्विकमुद्योतं च बन्धरहितं भवतीति। मलय.) । }

< तिर्यंच गति और उद्योत नामकर्मका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है? जो जघन्य सत्कर्मके साथ मनुष्यगतिको प्राप्त होकर हीन पल्योपम प्रमाण आयुवालोंमें उत्पन्न हुआ है, वहाँ अन्तर्मुहूर्त आयुके शेष रहनेपर सम्यक्त्वको प्राप्त कर पल्योपम प्रमाण आयुवाला देव हुआ, तत्पश्चात् अप्रतिपतित सम्यक्त्वके साथ मनुष्यगतिको प्राप्त हुआ, फिरसे भी अप्रतिपतित सम्यक्त्वके साथ इकतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला देव हुआ, वहाँ उत्पन्न होने के पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ, पश्चात् उस देवभवके अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ, पश्चात् जो शेष दो छ्यासठ सागरोपम तक सम्यक्त्वका परिपालन करके चार वार कषायोंको उपशमा कर उस उत्कृष्ट सम्यक्त्वकालमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर क्षपणामें उद्यत हुआ है, उसके अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें तिर्यंचगति और उद्योत नामकर्मका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है। >

जहा गईणं तहा तासिमाणुपुव्वीणं पि वत्तव्वं। वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीर अंगोवंग-बंधण-संघादाणं णिरयगइभंगो। आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग-बंधण-संघादाणं जहण्णपदेससंकमो कस्स? जो अभवसिद्धियपाओग्गाणं जहण्णेण कम्मेण पढमदाए जहण्णियं संजमद्धमणुपालेयूण मिच्छत्तं गदो, तदो तस्स उक्कस्सउव्वेल्लणकालस्स जं दुचरिमउव्वेल्लणखंडयं तस्स चरिमसमए तेसिं** (का प्रतौ 'जेसिं' इति पाठः।) जहण्णओ पदेससंकमो** (हस्सं कालं बंधिय विरओ आहारसत्तगं गंतुं। अविरइ महुव्वलंतस्स जा थोव उव्वलणा। क. प्र. २, १०६.) । }

< जैसे गतियोंके जघन्य प्रदेशसंक्रमकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही उसकी आनुपूर्वियोंकी भी प्ररूपणा करनी चाहिये। वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकबंधन और वैक्रियिकसंघातकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग, आहारकबंधन और आहारकसंघातका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है? जो अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य उक्त प्रकृतियोंके जघन्य संक्रमके साथ प्रथमतः जघन्य संक्रमकालका पालन कर फिर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है, उसके उत्कृष्ट उद्वेलनकालका जो द्विचरम उद्वेलनकाण्डक है उसके चरम समयमें उक्त प्रकृतियोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है। >

{ ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-बंधण-संघादाणं जहण्णओ पदेससंकमो कस्स? जो जहण्णएण कम्मेण तिपलिदोवमिएसु मणुस-तिरिक्खेसु उववण्णो तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स एदासिं पयडीणं जहण्णओ पदेससंकमो** (णर-तिरियाण तिपल्लस्संते ओरालियस्स पाउग्गा। क. प्र. २, १११.) ।

< औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकबंधन और औदारिकसंघातका प्रदेशसंक्रम किसके होता है? जो जघन्य सत्कर्मके साथ तीन पल्योपम आयुवाले मनुष्यों या तिर्यंचोंमें उत्पन्न हुआ है उसके तद्भवस्थ होनेके अन्तिम समयमें इन प्रकृतियोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है। >

{ तेजा-कम्मइयसरीर-तब्बंधण** (का प्रतौ 'सरीरबंधण', ता प्रतौ 'सरीर २-बंधण' इति पाठः।) -संघाद-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्तसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिणणामाणं जहण्णओ पदेससंकमो कस्स?** (अ-का प्रत्योर्नोपलभ्यते पदमिदम्।) जो कसाए अणुवसामेदूण** (अ प्रतौ 'उवसामेदूण' इति पाठः।) सेसेहि पयारेहि जहण्णयं संतकम्मं कादूण तदो खवणाए अब्भुट्ठिदो तस्स आवलियअपुव्वकरणस्स एदासिं पयडीणं जहण्णओ पदेससंकमो** (छत्तीसाए सुभाणं सेढिमणारुहिय सेसगविहीहिं। कट्टु जहण्णं खवणं अपुव्वकरणालिया अंते। क. प्र. २, १०९.)। }

< तैजस व कार्मण शरीर तथा उनके बन्धन व संघात, प्रशस्त वर्ण, गंध, रस व स्पर्श, अगुरुलघु, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति और निर्माण नामकर्मोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है? जो कषायोंका उपशम न करके शेष प्रकारोंद्वारा जघन्य सत्कर्म करके तत्पश्चात् क्षपणमें उद्यत हुआ है; उस आवली कालवर्ती अपूर्वकरणके इन प्रकृतियोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है। >

पसत्थसंठाण-संघडणाणं कम्मइयभंगो। अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-उवघाद-अथिर-असुह-अजसकित्तीणं जहण्णओ पदेससंकमो कस्स? जो** (अ-का प्रत्योः 'जे' इति

पाठः।) जहण्णेण कम्मेण चदुक्खुतं कसाए उवसामेदूण गुणसेडीहि गालिय सव्वलहुं खवणाए अब्भुट्ठिदो तस्स चरिमसमयअधापवत्तकरणे वट्टमाणस्स जहण्णओ पदेससंकमो। अप्पसत्थसव्वसंठाणसंघडणाणं अप्पसत्थविहायगइ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं णवुंसयवेदभंगो** (सम्मद्दिट्ठिअजोग्गाण सोलसण्हं पि असुभगईणं। थीवेएण सरिसगं णवरं पढमं तिपल्लेसु। क. प्र. २, ११०.) । आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणं तिरिक्खगइभंगो। णवरि छट्ठीए पुढवीए अंते सम्मत्तं घेत्तूण सम्मत्तेण सह णिग्गदो, पुणो सव्वं पि पंचासीदिसागरोवमसदं पूरेदव्वं। एसो तिरिक्खगदीदो एदासिं विसेसा** (इग-विगलिंदियजोगा अट्ठ पज्जत्तगेण सह ते (ता)सिं। तिरियगइसमं नवरं पंचासीउदहिसयं तु।। क. प्र. २, १०८.) । विगलिंदियजादिणामाणं साहारणसरीरभंगो। }

< प्रशस्त संस्थान और प्रशस्त संहननकी प्ररूपणा कार्मणशरीरके समान है। अप्रशस्त वर्ण, गंध, रस व स्पर्श, उपघात, अस्थिर, अशुभ और अपकीर्तिका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है? जो जघन्य सत्कर्मके साथ चार वार कषायोंको उपशमा करके गुणश्रेणियोंके द्वारा गलाकर सर्वलघु कालमें क्षपणामें उद्यत हुआ है, उसके अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें वर्तमान होनेपर उक्त प्रकृतियोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है। अप्रशस्त सब संस्थानों और संहननोंका तथा अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रकी प्ररूपणा नपुंसकवेदके समान है। आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीरकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके समान है। विशेषता इतनी है कि छठी पृथिवीमें अन्तमें सम्यक्त्वको ग्रहण करके और सम्यक्त्वके साथ निकलकर फिर सभीको एकसौ पचासी सागरोपम तक पूरा करना चाहिये। यह इन प्रकृतियोंके तिर्यंचगतिसे विशेषता है।

विशेषार्थ -- तिर्यंचगतिके जघन्य प्रदेशसंक्रमकी प्ररूपणामें १६३ सागरोपम और ४ पल्योपम तक उसके बन्धका अभाव निर्दिष्ट किया गया है। परन्तु इन आतप आदि प्रकृतियोंके बन्धका अभाव १८५ सागरोपम और ४ पल्य तक रहता है। वह इस प्रकारसे कोई-कोई क्षपितकर्मांशिक जीव छठी पृथिवीमें २२ सागरोपम आयुवाला नारकी उत्पन्न हुआ। वहाँ वह आयुमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर सम्यक्त्वको प्राप्त होकर उस अविनष्ट सम्यक्त्वके साथ मनुष्य

होता है और वहाँपर सम्यक्त्वके साथ संयमासंयमको पालकर फिर सौधर्म स्वर्गमें चार पल्योपम आयुवाला देव उत्पन्न होता है। वहाँ भी अविनष्ट सम्यक्त्वके साथ देवभवसे च्युत होकर मनुष्य भवको प्राप्त होता हुआ यहाँ संयमको पालता है और तब मृत्युको प्राप्त हो ग्रैवेयकोंमें ३१ सागरोपम प्रमाण आयुवाला देव उत्पन्न होता है। यहाँ उत्पन्न होनेके अन्तर्मुहूर्त पश्चात् वह मिथ्यात्वको प्राप्त होकर आयुमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर पुनः सम्यक्त्वको प्राप्त कर लेता है। तत्पश्चात दो छ्यासठ (१३२) सागरोपम काल तक सम्यक्त्वको पालकर और चार वार कषायोंको उपशमा कर इस उत्कृष्ट सम्यक्त्वकालमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर क्षपणामें उद्यत होता है। उस समय अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें उसके उपर्युक्त आतप आदि प्रकृतियोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है। इस प्रकार सौधर्म देवकी आयुके ४ पल्योपमोंके साथ १८५ (२२+३१+१३३) सागरोपम काल तक इन प्रकृतियोंके बन्धका अभाव रहता है जबकि तिर्यंचगतिके बन्धका अभाव ४ पल्योपमोंसे अधिक १६३ सागरोपम काल तक ही रहता है। यही उससे इन प्रकृतियों के जघन्य प्रकृतिसंक्रमके विशेषता है।

विकलेन्द्रिय जाति नामकर्मोंकी प्ररूपणा साधारणशरीरके समान है। >

{ उच्चागोदस्स मणुसगइभंगो। तित्थयरणामाए जहण्णओ पदेससंकमो कस्स? जहण्णएण कम्मेण पढमदाए जहण्णजोगेण जो बद्धो समयपबद्धो तमावलियादीदं संकामेंतस्स जहण्णओ पदेससंकमो, चरिमसमयमिच्छाइट्ठिस्स वा विज्झादेण जहण्णसंकमा** (तित्थयरस्स य बंधा जहण्णओ आलिंगं गंतुं।। क. प्र. २. १११.)। एवं सामित्तं। }

< उच्चगोत्रकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है। तीर्थंकर नामकर्मका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है? जघन्य सत्कर्मके साथ प्रथमतया जघन्य योगके द्वारा जो समयप्रबद्ध बाँधा गया है बन्धावलीके पश्चात् उसका संक्रम करनेवालेके तीर्थंकर प्रकृतिका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है अथवा, अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके विध्यातसंक्रमके द्वारा

उसका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है। इस प्रकार स्वामित्वकी प्ररूपणा समाप्त हुई।

>

{ मदिआवरणस्स उक्कस्सपदेससंकामओ केवचिरं कालादो होदि? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्सपदेससंकमो केवचिरं०? जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० अणंतकालं। चदुणाणावरण-चदुदंसणावरण-पंचंतराइयाणं मदिआवरणभंगो। }

< मतिज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका काल कितना है? जघन्य और उत्कर्षसे वह एक समय मात्र है। उसके अनुत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका काल कितना है? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है। शेष चार ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पाँच अन्तराय; इनके प्रकृत कालकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। }

{ सव्वकम्माणं पि उक्कस्सपदेससंकमस्स जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ। अणुक्कस्स-पदेससंकमस्स कालो पंचण्णं दंसणावरणीयाणं अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो, सादिओ सपज्जवसिदो वा। जो सो सादिओ सपज्जवसिदो सो जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। सादासादाणमणुक्कस्सपदेससंकमो केवचिरं०? जहण्णेण एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। मिच्छत्तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि। सम्मामिच्छत्तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० बे-छावट्ठिसागरोवमाणि पलिदोवमस्स असंखे० भागेण सादिरेयाणि। सम्मत्तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अणंताणुबंधीणं अणादियो अपज्जवसिदो, अणादियो सपज्जवसिदो, सादियो सपज्जवसिदो वा। जो सो सादिओ सपज्जवसिदो

तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। सेसाणं चरित्तमोहणीयपयडीणमणंताणुबंधिभंगो। }

< सब कर्मोके ही उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका काल जघन्य और उत्कर्षसे एक समय मात्र है। अनुत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका काल पाँच ज्ञानावरण प्रकृतियोंका अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित भी है। इसमें जो सादि-सपर्यवसित है वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्‌गलपरिवर्तन मात्र है। साता और असाता वेदनीयके अनुत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका काल कितना है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। मिथ्यात्व प्रकृतिका वह काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक छ्‌यासठ सागरोपम मात्र है। प्रकृत काल सम्यग्मिथ्यात्वका जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे अधिक दो छ्‌यासठ सागरोपम मात्र है। सम्यक्त्व प्रकृतिका यह काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है। अनन्तानुबन्धी प्रकृतियोंका यह काल अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित भी है। जो सादि-सपर्यवसित है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्‌गलपरिवर्तन मात्र है। शेष चारित्रमोहनीय प्रकृतियोंके उपर्युक्त कालकी प्ररूपणा अनन्तानुबन्धीके समान है। >

{ सादियसंतकम्माणं णामपयडीणं जह० उक्क० जच्चिरं पयडिसंकमकालो तच्चिरं अणुक्कस्सपदेससंकमकालो। अणादियसंतकम्मियासु पयडीसु जासिं पयडीणं भवसिद्धिओ उक्कस्सं करेदि तासिमणुक्कस्सपदेससंकमकालो अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो, सादिओ सपज्जवसिदो वा। तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। इदरासिं पयडीणं णाणावरणभंगो। }

< सादिसत्कर्मवाली नामप्रकृतियोंका जघन्य व उत्कर्षसे जितना प्रकृतिसंक्रमकाल है उतना ही उनका अनुत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमकाल भी है। अनादि सत्कर्मवाली प्रकृतियोंमें भव्यसिद्धिक जिन प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमको करता है उनके अनुत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका काल अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित भी है। उनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन है। अन्य प्रकृतियोंके प्रकृत कालकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। >

{ उच्चागोदस्स अणुक्कस्सपदेससंकमो जह० अंतोमुहुत्तं एगसमओ वा, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। णीचागोदस्स जह० एगसमओ, उक्क० बेछावट्ठिसागरोमाणि सादिरेयाणि। एवमुक्कस्सपदेससंकमकालो समत्तो। }

< उच्चगोत्रके अनुत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व एक समय और उत्कर्षसे साधिक दो छ्यासठ सागरोपम मात्र है। उक्त काल नीचगोत्रका जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक दो सागरोपम मात्र है। इस प्रकार उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमकाल समाप्त हुआ। >

{ जहण्णपदेससंकमकालो सामित्तादो साहेयूण वत्तव्वो। एयजीवेण अंतरं पि सामित्तादो साहेयव्वो। णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं च सामित्तादो साहेदूण भाणियव्वं। पुणो एत्थ सण्णियासो वत्तव्वो। }

<   जघन्य प्रदेशसंक्रमकालका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी भी प्ररूपणा स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये। नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तरको भी स्वामित्वसे सिद्ध करके कहना चाहिये। फिर यहाँ संनिकर्षका कथन करना चाहिये।   >

{   एत्तो अप्पाबहुअं। तं जहा -- उक्कस्सपदेससंकमो थोवो। केवलणाणावरणे असंखेज्जगुणो। केवलदंसणावरणे विसेसाहिओ। पयलाए असंखेज्जगुणो। णिद्दाए विसेसाहिओ। अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणो। कोहे विसेसाहिओ। माया० विसे०। लोभे विसे०। पच्चक्खाणमाणे विसे०। कोहे विसे०।मायाए० विसे०। लोभे विसे०। मिच्छत्ते विसे०। सम्मामिच्छत्ते विसे०। अणंताणुबंधिमाणे० विसे०। कोधे० विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। मिच्छत्त विसे०। सम्मामिच्छत्ते विसे०। पचलापचलाए असंखे० गुणो। णिद्दाणिद्दाए विसे०। थीणगिद्धीए विसे०। आहारसरीरणामाए अणंतगुणो। जसकित्तीए अणंतगुणो** (अ-का प्रत्योः 'असंखेज्जगुणो' इति पाठः।)। वेउव्वियसरीरणामाए असंखे० गुणो। ओरालिय० विसे०। तेजइय० विसे०। कम्मइय० विसे०। देवगइणामाए असंखेज्जगुणो। मणुसगइणामाए विसे०। साद० संखे० गुणो। लोहसंजलणाए संखे० गुणो। दाणंतराए विसे०। लाहंतराए विसे०। भोगंतराए विसे०। परिभोगंतराए विसे०। वीरियंतराए विसे०। मणपज्जवणाणावरणे विसे०। ओहिणाणावरणे विसे०। सुदणाणावरणे विसे०। मदिणाणावरणे विसे०। ओहिदंसणावरणे विसे०। अचक्खुदंसणावरणे विसे०। चक्खुदं० विसे०। उच्चागोदे संखे० गुणो। णिरयगइणामाए असंखे० गुणो। अजसकित्ति० असंखे० गुणो। असादे संखे० गुणो। णीचागोदे विसे०। तिरिक्खगइणामाए असंखे० गुणो। हस्से संखे० गुणो। रदीए विसे०। इत्थिवेदे संखे० गुणो। सोगे० विसे०। अरदीए विसे०। णवुंसयवेदे विसे०। दुगुंछाए विसे०। भय० विसे०। पुरिसवेदे संखे० गुणो। कोहसंजलणाए संखे० गुणो। माणसंजलणाए विसेसा०। मायासंजलणाए विसेसाहियो। एवमोघुक्कस्सपदेससंकमदंडओ समत्तो ।

}

< अब यहाँ अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। यथा -- उत्कृष्टप्रदेशसंक्रम सम्यक्त्व प्रकृतिमें स्तोक है। केवलज्ञानावरणमें असंख्यातगुणा है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें असंख्यातगुणा है। निद्रामें विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धी मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। आहारशरीर नामकर्ममें अनन्तगुणा है। यशकीर्तिमें अनन्तगुणा है। वैक्रियिकशरीर नामकर्ममें असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है। तैजसशरीरमें विशेष अधिक है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। देवगति नामकर्ममें असंख्यातगुणा है। मनुष्यगति नामकर्ममें विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। संज्वलन लोभमें संख्यातगुणा है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तराय में विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। उच्चागोत्रमें संख्यातगुणा है। नरकगति नामकर्ममें असंख्यातगुणा है। अयशःकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। नीचगोत्रमें विशेष अधिक है। तिर्यग्गति नामकर्ममें असंख्यातगुणा है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है। शोकमें विशेष अधिक है। अरतिमें विशेष अधिक है। नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है। संज्वलन क्रोधमें संख्यातगुणा है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। संज्वलनमायामें विशेष अधिक है। इस प्रकार ओघ उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमदंडक समाप्त हुआ। >

{ णिरयगईए सव्वत्थोवो सम्मत्ते उक्कस्ससंकमो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणो। कोहे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। पच्चक्खाणमाणे विसे०। कोहे विसे०। मायाए विसे० । लोभे विसे०। केवलणाणावरणे विसे०। पयलाए विसे०। णिद्दाए विसे०। पयलापयलाए विसे०। णिद्दाणिद्दाए विसे०। थीणगिद्दीए विसे०। केवलदंसणावरणे विसे०। मिच्छत्ते असंखे० गुणो। अणंताणुबंधिमाणे असंखे० गुणो। कोहे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। णिरयगइणामाए अणंतगुणो। वेउव्वियसरीरणामाए असंखे० गुणो। देवगइ संखे० गुणो। आहारसरीर० असंखे० गुणो। जसकित्ति० असंखे० गुणो। ओरालिय० संखे० गुणो। तेजइय० विसे०। कम्मइय० विसे०। अजसकित्ति० असंखे० गुणो। तिरिक्खगइ० विसे०। मणुसगइ० विसे०। हस्से० संखे० गुणो। रदि० विसे०। सादे संखे० गुणो। इत्थिवेदे संखे० गुणो। सोगे विसे०। अरदि० विसे०। णवुंस० विसे०। दुगुंछाए विसे०। भय० विसे०। पुरिसवे० विसे०। संजलणमाणे विसे०। कोधे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। दाणंतराए विसे०। लाहंतराइए विसे०। भोगंतरा० विसे०। परिभोगंतरा० विसे०। वीरियंतराए विसे०। मणपज्जवणाणावरणे विसे०। ओहिणाणावरणे विसे०। सुदणाणा० विसेसा०। मदिणाणावरणे विसे०। ओहिदंसणावरणे विसे०। अचक्खुदंसणावरणे विसे०। चक्खुदंस० विसे०। असादे** (अ-का प्रत्योः 'असादयो', ता प्रतौ 'असादाए' इति पाठः।) संखे० गुणो। उच्चागोदे विसे०। णीचागोदे विसे०। एवं** (अ-का प्रत्योर्नोपलभ्यते पदमिदम्।) णिरयगईए उक्कस्सओ पदेससंकमदंडओ समत्तो। }

< नरकगतिमें सम्यक्त्व प्रकृतिमें उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष

अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। नरकगति नामकर्ममें अनन्तगुणा है। वैक्रियिकशरीर नामकर्ममें असंख्यातगुणा है। देवगति नामकर्ममें संख्यातगुणा है। आहारकशरीर नामकर्ममें असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीर नामकर्ममें संख्यातगुणा है। तैजसशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है। कार्मणशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। तिर्यंचगति नामकर्ममें विशेष अधिक है। मनुष्यगति नामकर्ममें विशेष अधिक है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें असंख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है। शोकमें विशेष अधिक है। अरतिमें विशेष अधिक है। नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। पुरुषवेदमें विशेष अधिक है। संज्वलनमानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें विशेष अधिक है। नीचगोत्रमें विशेष अधिक है। इस प्रकार नरकगतिमें उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमदंडक समाप्त हुआ । >

[तिरिक्खगईए उक्कस्सओ पदेससंकमो सम्मत्ते थोवो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणो। कोधे विसे०। माया विसे०। लोभे विसे०। पच्चक्खाणमाणे विसे०। कोधे विसे०। माया विसे०। लोभे विसे०। केवलणाणावरणे विसे०। पयलाए विसे०। णिद्दाए विसे०। पयलापयला० विसेसा०। णिद्दाणिद्दाए विसे०। थीणगिद्धीए विसे०। केवलदंसणावरणे विसे०। मिच्छत्ते असंखे०

गुणो। अणंताणुबंधिमाणे असंखे० गुणो। कोहे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। णिरयगइणामाए अणंतगुणो। आहारसरीर० असंखे० गुणो। जसकित्ति० असंखे० गुणो। वेउव्विय० संखे० गुणो। ओरालिय विसे०। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसे०। अजसकित्ति० संखे० गुणो। देवगदीए विसे०। तिरिक्खगईए विसे०। मणुसगई० विसे०। हस्से० संखे० गुणो। रदीए विसे०। सादे संखे गुणो। इत्थिवेदे संखे० गुणो। सोगे विसे०। अरदि० विसे०। णवुंस० विसे०। दुगुंछा० विसे०। भय० विसे०। पुरिस० विसे०। संजलणमाणे विसे०। कोधे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। दाणंतराइए विसे०। लाहंतराइए विसे०। भोगंतराइए विसे०। परिभोगंतराइए विसे०। वीरियंतराइए विसे०। मणपज्जवणाणावरणे विसे०। ओहिणाणावरणे विसे०। सुदणा० विसे०। मदिणा० विसे०। ओहिणाणावरणे विसे०। अचक्खुदंस० विसे०। चक्खुदंस० विसे०। असादे संखे० गुणे। उच्चागोदे विसे०। णीचागोदे विसेसाहिओ। एवं तिरिक्खगदीए उक्कस्सओ पदेससंकमदंडओ समत्तो। }

< तिर्यंचगतिमें उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम सम्यक्त्व प्रकृतिमें सबसे स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। नरकगति नामकर्ममें अनन्तगुणा है। आहारकशरीर नामकर्ममें असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है। औदारिकशरीरमें विशेष अधिक है। तैजसशरीरमें विशेष अधिक है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। देवगतिमें विशेष अधिक है। तिर्यंचगतिमें विशेष अधिक है। मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है।

सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है। शोकमें विशेष अधिक है। अरतिमें विशेष अधिक है। नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। पुरुषवेदमें विशेष अधिक है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें विशेष अधिक है। नीचगोत्रमें विशेष अधिक है। इस प्रकार तिर्यंचगतिमें उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमदण्डक समाप्त हुआ। >

{ जहा तिरिक्खगदीए तहा तिरिक्खजोणिणीसु। मणुस्सेसु मणुसिणीसु च मूलोघं। देवाणं देवीणं च णेरइयभंगो। }

< जैसे तिर्यंचगतिमें प्रकृत अल्पबहुत्वका कथन किया गया है वैसे ही तिर्यंच योनिमतियोंमें भी समझना चाहिये। मनुष्यों और मनुष्यणियोंमें भी इस अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मूलोघके समान है। देवों और देवियोंकी यह प्ररूपणा नारकियोंके समान है। >

{ असण्णीसु सम्मत्ते उक्कस्सपदेससंकमो थोवो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणो। कोधे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। पच्चक्खाणमाणे विसे०। कोधे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। अणंताणुबंधिमाणे विसे०। कोधे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। केवलणाणावरणे विसेसा०। पयलाए

विसे०। णिद्दाए विसे०। पयलापयलाए विसे०। णिद्दाणिद्दाए विसे०। थीणगिद्धीए विसे०। केवलदंसणावरणे विसे०। णिरयगई० अणंतगुणो। आहारसरीरे असंखे० गुणो। जसकित्ति० असंखे० गुणो। वेउव्वियसरीरे संखे० गुणो। ओरालिय० विसे०। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसे०। अजसकित्ति० संखे० गुणो। देवगदिणामा० विसे०। तिरिक्खगई० विसे०। मणुस्सगई० विसे०। हस्से संखे० गुणो। रदी० विसे०। सादे संखे० गुणो०। इत्थिवेदे संखे० गुणो। सोगे विसे०। अरदि० विसे०। णवुंसयवेदे विसे०। दुगुंछा० विसे०। भय० विसे०। पुरिसवेदे विसे०। संजलणमाणे विसे०। कोधे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। दाणंतराइए विसे०। लाहंतराइए विसे०। भोगंतराइए विसे०। परिभोगंतराइए विसे०। विरियंतराइए विसे०। मणपज्जवणाणावरणे विसे०। ओहिणाणा विसे०। सुदणाणा० विसे०। मदिणा० विसे०। ओहिदंसणाव० विसे०। अचक्खुदंस० विसे०। चक्खुदंस० विसे०। असादे संखे० गुणो। उच्चागोदे विसे०। णीचागोदे विसे०। एवं असण्णीसु** (अ-का प्रत्योः 'मणुस्सिणीसु', ता प्रतौ 'मणुसिणीसु (असण्णीसु)' इति पाठः।) उक्कस्सओ पदेससंकमदंडओ

समत्तो। }

< असंज्ञी जीवोंमें उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम सम्यक्त्व प्रकृतिमें सबसे स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धी मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। नरकगतिमें अनन्तगुणा है। आहारशरीरमें असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरमें असंख्यातगुणा है। औदारिक शरीरमें विशेष अधिक है। तैजसशरीरमें विशेष अधिक है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। देवगति

नामकर्ममें विशेष अधिक है। तिर्यंचगति नामकर्ममें विशेष अधिक है। मनुष्यगति नामकर्ममें विशेष अधिक है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है। शोकमें विशेष अधिक है। अरतिमें विशेष अधिक है। नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। पुरुषवेदमें विशेष अधिक है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञ ानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें विशेष अधिक है। नीचगोत्रमें विशेष अधिक है। इस प्रकार असंज्ञी जीवोंमें उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमदण्डक समाप्त हुआ। >

{ जहा सण्णीसु तहा एइंदिय-विगलिंदिएसु। }

< जैसे असंज्ञी जीवोंमें यह प्ररूपणा की गई है वैसे ही एकेन्द्रियों और विकलेन्द्रियोंके विषयमें भी जानना चाहिये। >

{ एत्तो ओघजहण्णपदेससंकमदंडओ कायव्वो। तं जहा -- सव्वत्थोवो सम्मत्ते जहण्णओ पदेससंकमो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। मिच्छत्ते असंखे० गुणो।

अणंताणुबंधिमाणे असंखे० गुणो। कोधे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। पयलापयला० असंखे० गुणो। णिद्दाणिद्दाए विसे०। थीणगिद्धीए विसे०। अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणो। कोधे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। पच्चक्खाणमाणे विसे०। कोधे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। केवलणाणावरणे विसे०। }

< अब यहाँ ओघ जघन्य प्रदेशसंक्रमदण्क करते हैं। वह इस प्रकार है -- जघन्य प्रदेशसंक्रम सम्यक्त्व प्रकृतिमें सबसे स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। >

{ कुदो विसेसाहियत्तं? विज्झादभागहारादो चरिमसमयसुहुमसांपराइय-अधापवत्तभागहारस्स विसेसहीणत्तादो। ण च अधापवत्तभागहारो अवट्ठिदो, एदम्हादो चेव तदणवट्ठिदत्तावगमादो। ण च पुव्विल्लभागहारप्पाबहुएण सह विरोहो, सव्वजहण्णभागहारे पडुच्च तदुप्पत्तीदो। }

< शंका -- उसमें विशेष अधिक क्यों है?

समाधान -- इसका कारण यह है कि विध्यातभागहारकी अपेक्षा अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसांपरायिकका अधःप्रवृत्तभागहार विशेष हीन है। और यह अधःप्रवृत्तभागहार कुछ अवस्थित नहीं है, क्योंकि, इसीसे उसकी अनवस्थितता जानी जाती है। पूर्वोक्त भागहारके

अल्पबहुत्वके साथ इसका विरोध होगा, यह भी कहना ठीक नहीं है; क्योंकि, उसकी उत्पत्ति सबसे जघन्य भागहारके आश्रित है। >

{ पयलाए विसे० पयडिविसेसेण। णिद्दाए विसे०। केवलदंस० विसे०। णिरयगयिणामाए अणंतगुणो। देवगइणामाए असंखे० गुणो। वेउव्वियसरीर० संखे० गुणो। आहारसरीर असंखे० गुणो। मणुसगइ संखे० गुणो। उच्चागोदे संखे० गुणो। तिरिक्खगइ० असंखे० गुणो। कुदो? उव्वेल्लणभागहारादो तेवड्डिसागरोवमसदण्णोण्णब्भत्थरासिगुणिदविज्झादभागहारहस्स असंखे० गुणहीणत्तादो। णवुंसयवेद० असंखे० गुणो। णीचागोद० संखेज्ज गुणो। इत्थिवेद० असंखे० गुणो०। ओरालिय० असंखे० गुणो। कोधसंजलण० असंखे० गुणो। माणसंजलण० विसे०। पुरिस० विसे०। मायासं० विसे०। जसकित्ति० असंखे० गुणो। तेजइय० संखे० गुणो, धुवबंधित्तादो। कम्मइय० विसे०। अजसकित्ति० संखे० गुणो। हस्से संखे० गुणो। रदी विसेसा०। सादे संखे० गुणो। सोगे संखे० गुणो। कुदो अधापवत्तभागहारादो विज्झादभागहारस्स संखेज्जगुणहीणत्तं णव्वदे? एदम्हादो चेव सुत्तादो। अरदी० विसे०। दुगुंछा० विसे०। भय० विसे०। लोहसंजल० विसे०। दाणंतराइय० विसे०। लाहंतरा० विसे०। भोगंतरा० विसे०। परिभोगंतरा० विसे०। विरियंतरा० विसे०। मणपज्जव० विसे०। ओहिणा० विसे०। सुदणाणावरणे० विसे०। आभिणिबोहियणाणाव० विसे०। ओहिदंसणाव० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। असादे संखेज्जगुणो। एवमोघेण जहण्णओ पदेससंकमदंडओ समत्तो। }

< केवलज्ञानावरणकी अपेक्षा वह प्रचलामें प्रकृतिविशेषसे विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। नरकगति नामकर्ममें अनन्तगुणा है। देवगति नामकर्ममें असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है। आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है। मनुष्यगति नामकर्ममें संख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है। तिर्यंचगति नामकर्ममें असंख्यातगुणा है, क्योंकि, उद्वेलनभागहारकी अपेक्षा एकसौ तिरेसठ

सागरोपमोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे गुणित विध्यातभागहार असंख्यातगुणा हीन है। तिर्यंचगतिसे नपुंसकवेदमें असंख्यातगुणा है। नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है। संज्वलनक्रोधमें असंख्यातगुणा है। संज्वलनमानमें विशेष अधिक है। पुरुषवेदमें विशेष अधिक है। संज्वलन मायामें विशेष अधिक है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरमें संख्यातगुणा है, क्योंकि, वह ध्रुवबंधी है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। शोकमें संख्यातगुणा है।

शंका -- अध-प्रवृत्तभागहारकी अपेक्षा विध्यातभागहार संख्यातगुणा हीन है, यह कहाँसे जाना जाता है?

समाधान -- वह इसी सूत्रसे जाना जाता है।

उससे अरतिमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है।संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। आभिनिबोधिक ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। इस प्रकार ओघसे जघन्य प्रदेशसंक्रमदण्डक समाप्त हुआ। >

{ णिरयगईए सव्वत्थोवो सम्मत्ते जहण्णओ पदेससंकमो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। मिच्छत्ते असंखे० गुणो** (अ प्रतौ 'मिच्छत्तअणंतगुणो' इति पाठः।)। अणंताणुबंधिमाणे असंखे० गुणो। कोधे० विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। पयलापयला० असंखे० गुणो। णिद्दाणिद्दा० विसे०। थीणगिद्धीए विसे०। अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणो। कोधे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। पच्चक्खाणमाणे विसे०। कोधे विसे०। मायाए

विसे०। लोभे विसे०। केवलणाणावरणे विसे०। पयलापयलाए विसे०। णिद्दाए विसे०। केवलदंसणावरणे विसे०। आहार० अणंतगुणो। देवगइ० असंखे० गुणो। मणुसगइ० संखे० गुणो। वेउव्विय० संखे० गुणो। णिरयगइ संखे० गुणो। उच्चागोदे संखे० गुणो। तिरिक्खगइ० असंखे० गुणो। इत्थिवेद० संखेज्जगुणो। णीचागोदे संखे० गुणो। जसकित्ति० असंखे० गुणो। ओरालिय० संखे० गुणो। तेजइय० विसे०। कम्मइय० विसे०। अजसकित्ति० संखे० गुणो। पुरिसवेदे संखे० गुणो। हस्से संखे० गुणो। रदि० विसे०। सादे संखे० गुणो। सोगे संखे० गुणो। अरदि० विसे०। दुगुंछा० विसे०। भय० विसे०। संजलणमाणे विसे०। कोधे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसेसाहिओ। दाणंतराए विसे०। लाहंतराए विसे०। भोगंतराए विसे०। परिभोगंतराए विसे०। वीरियंतराए विसे०। मणपज्जवणाणावरणे विसे०। ओहिणा० विसे०। सुदणा० विसे०।मदिणा० विसे०। ओहिदंस० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। असादे० संखे० गुणो। एवं णिरयगदीए संकमदंडओ समत्तो। }

< नरकगतिमें जघन्य प्रदेशसंक्रम सम्यक्त्व प्रकृतिमें सबसे स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। आहारशरीरमें अनन्तगुणा है। देवगतिमें असंख्यातगुणा है। मनुष्यगतिमें संख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है। नरकगतिमें संख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है। तिर्यंच गतिमें असंख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है। नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है। तैजसशरीरमें विशेष अधिक है। कार्मणशरीरमें विशेष

अधिक है। अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। शोकमें संख्यातगुणा है। अरतिमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतङ्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है।इस प्रकार नरकगतिमें जघन्य प्रदेशसंक्रमदंडक समाप्त हुआ। >

{ तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु जावुच्चागोदं ति मूलोघं। तदो उच्चागोदादो ओरालिय० असंखे० गुणो। तिरिक्खगइ० संखे गुणो। इत्थि० संखे० गुणो। णवुंस संखे० गुणो। णीचागोद० संखे० गुणो। जसकित्ति० असंखे० गुणो। तेजा संखे० गुणो। कम्मइय० विसे०। अजसकित्ति० संखे० गुणो। पुरिस० संखे० गुणो। हस्से संखे० गुणो। रदि० विसे०। सादे संखे० गुणो। सोगे संखे० गुणो। अरदि० विसे०। दुगुंछा विसे०। भय० विसे०। एत्तो उवरि णेरइयभंगो जाव असादं ति। एवं तिरिक्खगदीए जहण्णसंकमदंडओ समत्तो।

}

< तिर्यंचगतिमें तिर्यंचोंमें प्रकृत अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा उच्चगोत्र तक मूल - ओघके समान है। तत्पश्चात् उक्त जघन्य प्रदेशसंक्रम उच्चगोत्रकी अपेक्षा औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है। तिर्यंचगतिमें संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है। नपुंसकवेदमें संख्यातगुणा है। नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरमें

संख्यातगुणा है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। शोकमें संख्यातगुणा है। अरतिमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। इसके आगे असातावेदनीय तक उक्त प्ररूपणा नारकियोंमें समान है। इस प्रकार तिर्यंचगतिमें जघन्य प्रदेशसंक्रमदण्डक समाप्त हुआ।

>

{ एवं तिरिक्खजोणिणीसु। मणुसगदीए मणुस्सेसु जाव आहारसरीरं ति मूलोघो। तदो तिरिक्खगदीए असंखे० गुणो। णवुंस० असंखे० गुणो। णीचागोदे संखे० गुणो। इत्थिवेदे असंखे० गुणो। मणुसगई० असंखे० गुणो। ओरालिय० असंखे० गुणो। कोधसंजलण असंखे० (अ प्रतौ 'कोधसंखे', का प्रतौ 'कोधसं० असंखे' इति पाठः।) गुणो। माणे विसे०। पुरिस० विसे०। माया० विसे०। उच्चागोद० असंखे० गुणो। जसकित्ति० असंखे० गुणो। सेसाणि पदाणि ओघियाणि। एवं मणुसिणीसु। }

< इसी प्रकार तिर्यंच योनिमतियोंमें भी प्रकृत संक्रमदण्डककी प्ररूपणा है। मनुष्यगतिमें मनुष्योंमें यह प्ररूपणा आहारकशरीर तक मूल -ओघके समान है। तत्पश्चात् वह जघन्य प्रदेशसंक्रम आहारकशरीरकी अपेक्षा तिर्यंचगतिमें अनंतगुणा है। नपुंसकवेदमें असंख्यातगुणा है। नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है। मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है। संज्वलन क्रोधमें असंख्यातगुणा है। मानमें विशेष अधिक है। पुरुषवेदमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। उच्चगोत्रमें असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। शेष पद ओघके समान है। इसी प्रकार मनुष्यनियोंमें भी प्रकृत प्ररूपणा करना चाहिये। >

{ देवेसु जाव केवलदंसणावरणं ति मूलोघो। तत्तो आहार० अणंतगुणो। णिरयगई असंखे० गुणो। णवुंस० असंखे० गुणो। णीचागोद० संखे० गुणो। इत्थि असंखे० गुणो। देवगई० असंखे० गुणो। वेउव्वि० संखे० गुणो। मणुसगइ० असंखे० गुणो। ओरालि० असंखे० गुणो। उच्चागोदे असंखे० गुणो। जसकित्ति० असंखे० गुणो। तेजइय० संखेज्जगुणो। एत्तो उवरि णेरइयभंगो। एवं देवेसु जहण्णसंकमदंडओ समत्तो। }

< देवोंमें केवलदर्शनावरण तक मूल-ओघके समान प्ररूपणा है। उससे उक्त जघन्य प्रदेशसंक्रम आहारशरीरमें अनन्तगुणा है। नरकगतिमें असंख्यातगुणा है। तिर्यंचगतिमें असंख्यातगुणा है। नपुंसकवेदमें असंख्यातगुणा है। नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है। देवगतिमें असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है। मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरमें संख्यातगुणा है। इसके आगे यह प्ररूपणा नारकियोंके समान है। इस प्रकार देवोंमें जघन्य प्रदेशसंक्रामदण्डक समाप्त हुआ। >

{ असण्णीसु सव्वत्थोवो सम्मत्ते जहण्णसंकमो। सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो। मिच्छत्ते असंखे० गुणो। अणंताणुबंधिमाणे असंखे० गुणो। कोधे विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणो। कोधे० विसे०। माया० विसे०। लोभे विसे०। पच्चक्खाणमाणे विसे०। कोधे विसे०। माया० विसे०। लोभे विसे०। केवलणाणावरणे विसे०। पयलाए विसे०। णिद्दाए विसे०। पयलापयलाए विसे०। णिद्दाणिद्दाए विसे०। थीणगिद्धीए विसे०। केवलदंस० विसे०। णिरयगई० अणंतगुणो। देवगई० असंखे० गुणो। वेउव्वि० संखे० गुणो। आहार० असंखे० गुणो। मणुसगई० संखे० गुणो। उच्चागोदे संखे० गुणो। जसकित्ति० संखे० गुणो। ओरालिय० संखे० गुणो। तेजा० विसे०। कम्मइय० विसे०। तिरिक्खगदीए संखे० गुणो। अजसकित्ति० विसे०। पुरिसवेदे संखे० गुणो। इत्थिवेदे संखे० गुणो। हस्से संखे० गुणो। रदी० विसे०। सादे० संखे० गुणो। सोगे संखे० गुणो। अरदी० विसे०। णवुंस० विसे०। दुगुंछ० विसे०। भय० विसे०। संजलणमाणे विसे०। कोधे० विसे०। मायाए विसे०। लोभे विसे०। दाणंतराइए

विसे०। लाहंतराइए विसे०। भोगंतरा० विसे०। परिभोगंतरा० विसे०। वीरियंतरा० विसे०। मणपज्जव० विसे०। ओहिणाणावरण० विसे०। सुदणा० विसे०। मदिणाणाव० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। असादे० असंखे० गुणो। णीचागोदे विसेसाहिओ। एवमसण्णीसु जहण्णओ पदेससंकमदंडओ समत्तो। }

< असंज्ञी जीवोंमें जघन्य प्रदेशसंक्रम सम्यक्त्व प्रकृतिमें सबसे स्तोक है। सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। नरकगतिमें अनन्तगुणा है। देवगतिमें असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है। आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है। मनुष्यगतिमें संख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है। तैजसशरीरमें विशेष अधिक है। कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है। तिर्यंचगतिमें संख्यातगुणा है। अयशकीर्तिमें विशेष अधिक है। पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है। शोकमें संख्यातगुणा है। अरतिमें विशेष अधिक है। नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। संज्वलन मानमें विशेष अधिक है। क्रोधमें विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञ ानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है।

अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। असातावेदनीयमें असंख्यातगुणा है। नीचगोत्रमें विशेष अधिक है। इस प्रकार असंज्ञी जीवोंमें जघन्य प्रदेशसंक्रमदण्डक समाप्त हुआ। >

{ जहा असण्णीसु तहा एइंदिय-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिएसु वि वत्तव्वं। }

< जिस प्रकार असंज्ञियोंमें यह प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार एकेन्द्रियों, द्वीन्द्रियों, त्रीन्द्रियों और चतुरिन्द्रियोंमें भी उसे करना चाहिये। >

{ एत्तो भुजगारसंकमो उच्चदे -- भुजगारे अट्ठपदं कादूण सामित्तं कायव्वं। तं जहा -- मदिआवरणस्स भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिदसंकामगो को होदि? अण्णदरो। अवत्तव्व० को होइ? अण्णदरो उवसंतकसाओ परिवदमाणओ। चदुणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-पुरिसवेद-पंचंतराइयाणं सम्माइट्ठीसु वा मिच्छाइट्ठीसु वा धुवबंधिणामपयडीणं च मदिआवरणभंगो। सादासाद-सम्मत्त-सम्मामि० हस्स-रदि-अरदि-सोग-इत्थि-णवुंसयवेद-उच्च-णीचागोद-परियत्तमाणणामपयडीणं पि एवं चेव। णवरि अवट्ठिदसंकमो णत्थि** (मिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद-अवत्तव्वसंकामया अत्थि। सोलसकसाय-पुरिसवेद-भय-दुगुंछाणं। एवं चेव सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त-इत्थि-णवुंसयवेद-हस्स-रइ-अरइ-सोगाणं। णवरि अवट्ठिदसंकामगा णत्थि। क. पा. सु. पृ. ४२३, २६४-६७) । एवं सामित्तं समत्तं।
}

< अब यहाँ भुजगारसंक्रमका कथन करते हैं -- भुजाकारके विषयमें अर्थपद करके स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है। यथा -- मतिज्ञानावरणका भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित संक्रामक कौन होता है? उसका संक्रामक अन्यतर जीव होता है। अवक्तव्य संक्रामक कौन होता है? उसका संक्रामक परिपतमान अर्थात् उपशमश्रेणिसे गिरनेवाला अन्यतर उपशान्तकषाय होता है। शेष चार ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद और पाँच अन्तराय इनकी सम्यग्दृष्टियों एवं मिथ्यादृष्टियोंमें तथा ध्रुवबन्धी नामप्रकृतियोंकी भी यह प्ररूपणा मतिज्ञानावरण के समान है। साता व असाता वेदनीय, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, हास्य, रति, अरति, शोक, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, उच्चगोत्र, नीचगोत्र और परिवर्तमान नामप्रकृतियोंकी भी प्रकृत प्ररूपणा इसी प्रकार ही है। विशेषता इतना है कि इनका अवस्थित संक्रम नहीं है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ। >

{ एयजीवेण कालो। तं जहा -- मदिआवरणस्स भुज० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अप्पदरकालो जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अवट्ठियस्स जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। एवं चउणाणावरण-णवदंसणावरण-पंचंतराइयाणं। सादस्स भुजगारसंकामओ केव0? जह० एगसमओ, उक्क० आवलिया समयूणा। अप्पदरसंकामओ केव0? जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं।** (कोष्ठकस्थोऽयं पाठ अ-का-ता प्रतिष्वनुपलभ्यमानो म प्रतितोऽत्र योजितः।) असादस्स भुजगार-अप्पदरसंक० केव०? जह० एगस०, उक्क० अंतोमुहुत्तं।) }

< एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा करते हैं। यथा -- मतिज्ञानावरणके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है। इसके अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है। अवस्थित संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे

संख्यात समय मात्र है। इसी प्रकार शेष चार ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण और पाँच अन्तराय प्रकृतियोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये। सातावेदनीयके भुजाकार संक्रामकका काल कितना है? वह जघन्य से एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम आवली प्रमाण है। उसके अल्पतर संक्रामकका काल कितना है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। असातावेदनीयके भुजाकार और अल्पतर संक्रामकोंका काल कितना है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। >

{ मिच्छत्तस्स भुज० जह० एगस०। उक्क० अंतोमुहुत्तं। आवलिया समऊणा। अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि। अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया** (मिच्छत्तस्स भुजगारसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण आवलिया समयूणा, अधवा अंतोमुहुत्तं। अप्पयरसंकमो केवचिरं कालादो होदि? एक्को वा समयो जाव आवलिया दुसमयूणा, अधवा अंतोमुहुत्तं। तदो समयुत्तरो जाव छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि। अवट्ठिदसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एयसमयो। उक्कस्सेण संखेज्जा समया। अवत्तव्वसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णुक्कस्सेण एयसमयो। क. पा. सु. पृ. ४२७, २९९-३११) । सम्मत्तस्स भुजगार० जहण्णेण एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अप्पदर० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदो असंखे० भागो। अवट्ठिदसंकमो णत्थि** (सम्मत्तस्स भुजगारसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एयसमओ। उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। अप्पयरसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। अवत्तव्वसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ क. पा. सु. पृ. ४२९, ३१२-१७)। सम्मामिच्छत्तस्स भुजगार० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। अप्पदर जह० अंतोमु०, उक्क० बे-छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि** (सम्मामिच्छत्तस्स भुजगारसंकमो केवचिरं कालादो होदि? एक्को वा दो वा समया। एवं समयुत्तरो उक्कस्सेण जाव चरिमुव्वेल्लणकडयुक्कीरणा त्ति। अधवा सम्मत्तमुप्पादेमाणयस्स वा तदो खवेयमाणस्स वा जो गुणसंकमकालो सो वि भुजगारसंकमायस्स कायव्वो। अप्पदरसंकामगो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। एयसमओ वा।

उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि। अवत्तव्वसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ। क. पा. सु. पृ. ४२९, ३२१-२८) । }

< मिथ्यात्वके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त अथवा एक समय कम आवली मात्र है। अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है। सम्यक्त्व प्रकृतिके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है। उसका अवस्थित संक्रम नहीं होता। सम्यग्मिथ्यात्वके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहुर्त मात्र है। अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो छ्यासठ सागरोपम मात्र है। >

{ अणंताणुबंधीणं भुजगारकालो जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० बे-छावट्ठिसागरो० सादिरेयाणि। अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया** (अणंताणुबंधीणं भुजगारसंकामगो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एयसमओ। उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। अप्पदरसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एयसमओ। उक्कस्सेण बेछावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि। अवट्ठिदसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एयसमओ। उक्कस्सेण संखेज्जा समया। अवत्तव्वसंकामगो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ। क. पा. सु. पृ. ४३०, ३२९-३३९.) बारसकसाय-भय-दुगुंछाणं** (ता प्रतौ 'बारसकसाय-दुगुंछाणं' इति पाठः।) मदिआवरणभंगो** (बारसकसाय-पुरिसवेद-भय-दुगुंछाणं भुजगार-अप्पदरसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेणेयसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। अवट्ठिदसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एयसमओ। उक्कस्सेण संखेज्जा समया। अवत्तव्वसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ। क. पा. सु. पृ. ४३१, ३४०-४७)। हस्स-रदि-अरदि-सोग-

इत्थि-णवुंसयवेदाणं भुजगार-अप्पदरसंकमणकालो जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं** (हस्स-रइ-अरइ-सोगाणं, भुजगार-अप्पयरसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एयसमओ। उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। क. पा. सु. पृ. ४३२, ३६०-६२.)। अवट्ठिय० णत्थि। णवरि इत्थिवेद० अप्पदर० उक्क० बे-छावट्ठिसागरो० सादिरेयाणि** (अप्पयरसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण बे छावट्ठिसागरोवमाणि संखेज्जवस्सब्भहियाणि। क. पा. सु. पृ. ४३१, ३५१-५३.)। णवुंस० अप्पदर० सतिपलिदोवमाणि बे-छावट्ठिसागरोवमाणि** (णवुंसयवेदस्स अप्पयरसंकमो केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एयसमओ। उक्कस्सेण बेछावट्ठिसागरोवमाणि तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि। सेसाणि इत्थिवेदभंगो। क. पा. सु. पृ. ४३२, ३५६-५९.)। पुरिसवेदस्स मदिआवरणभंगो। }

< अनन्तानुबन्धि चतुष्टयके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है। अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक दो छ्यासठ सागरोपम मात्र है। अवस्थित संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है। बारह कषाय, भय और जुगुप्साकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। हास्य, रति, अरति, शोक और नपुंसकवेद; इनके भुजाकार व संक्रामकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। इनका अवस्थित संक्रम नहीं होता। विशेष इतना है कि स्त्रीवेदके अल्पतर संक्रामकका काल उत्कर्षसे दो छ्यासठ सागरोपम मात्र है, तथा नपुंसकके अल्पतर संक्रामकका उत्कृष्ट काल तीन पल्योपमोंसे सहित दो छ्यासठ सागरोपम मात्र है। पुरुषवेदकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है। >

{ णिरयगइणामाए भुजगार० जहण्णुक्क० अंतोमुहुत्तं। अप्पदर० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० बे-छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि। अवट्ठिदसंकमो णत्थि। तिरिक्खगइणामाए भुजगारसंकमो हेदुणा उवएसेण च जहण्णुक्क० अंतोमुहुत्तं। अप्पदर० तिरिक्खगइणामाए जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तेवट्ठिसागरोवमसदं सादिरेयं। अवट्ठिय० णत्थि। मणुसगईणामाए भुजगार०

जह० एगसमओ। उक्क० पलिदो० असंखे० भागो, हेदुणा तेत्तीससागरोवमाणि समयूणाणि। जह एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो, हेदुणा तिण्णि पलिदो० सादिरेयाणि। अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। देवगइणामाए भुजगार० जह० एगसमओ। उक्क० पलिदो० असंखे० भागो, हेदुणा तिण्णि पलिदो० सादिरेयाणि। अप्पदर० जह० एगसमओ। उक्क० पलिदो० असंखे० भागो, हेदुणा तेत्तीसं सागरोवमाणि सादि०। अवट्ठिय० जहण्णेण एगसमओ, उक्क. संखेज्जा समया। >

< नरकगति नामकर्मके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्य और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो छ्यासठ सागरोपम मात्र है। अवस्थित संक्रम उसका नहीं होता। तिर्यंचगति नामकर्मके भुजाकार संक्रामका जघन्य जघन्य व उत्कृष्ट काल हेतु और उपदेशसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। तिर्यंचगति नामकर्मके अल्पतर संक्रमका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपम मात्र है। अवस्थित संक्रम उसका नहीं होता। मनुष्यगति नामकर्मके भुजाकार संक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है, युक्तिसे वह एक समय कम तैंतीस सागरोपम मात्र है। उसके अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय मात्र है। उत्कर्षसे वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग तथा उससे साधिक तीन पल्य प्रमाण है। अवस्थित संक्रामकका काल जघन्यसे संख्यात समय मात्र है। देवगति नामकर्मके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय मात्र है। उत्कर्षसे वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग तथा हेतुसे साधिक तीन पल्योपम प्रमाण है। अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय मात्र है। उत्कर्षसे वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग तथा हेतुसे साधिक तैंतीस सागरोपम मात्र है। अवस्थित संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है।

>

{ ओरालियसरीर० भुजगार० जह० एगसमओ। उक्क० पलिदो० असंखे० भागो, हेदुणा तेत्तीसं सागरोवमाणि समयूणाणि। अप्पदर० जह० एगस०। उक्क० पलिदो० असं० भागो, हेदुणा तिण्णि पलिदो० सादिरेयाणि। अवट्ठिय० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। वेउव्वियसरीरस्स देवगइभंगो। }

< औदारिकशरीरके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय मात्र है। उत्कर्षसे वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग तथा हेतुसे एक समय कम तैंतीस सागरोपम मात्र है। अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय मात्र है। उत्कर्षसे वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग तथा हेतुसे साधिक तीन पल्योपम मात्र है। अवस्थित संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है। वैक्रियिकशरीरकी प्ररूपणा देवगतिके समान है। >

{ धुवबंधीणं सव्वणामपयडीणं मदिणाणावरणभंगो। समचउरससंठाणस्स भुजगार-अप्पदरकालो जह० एगसमओ। उक्क० उवदेसेण पलिदो० असंखे० भागो, हेदुणा भुजगारकालो अप्पदरकालो च तेत्तीसं सागरो० सादिरेयाणि। अवट्ठिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। वज्जरिसहणारायणसंघडणस्स मणुसगइभंगो। }